खण्ड-403, अंक-2
मंगलवार, 22 माघ, शक संवत् 1913
(11 फरवरी, 1992 ई0)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

(ग्यारहवीं विधान सभा, प्रथम सत्र 1992)

खण्ड 403 में 10 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:

निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ, उत्तर प्रदेश (भारत)

1992

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

(क)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

मंगलवार, दिनांक ११ फरवरी, १९९२

निम्नांकित सदस्यों के अतिरिक्त अन्य सभी सदस्य उपस्थित थे–

अखिलेश, श्री	महराजगंज	अतीक अहमद, श्री	इलाहाबाद
अब्दुल ए० सलाम, श्री	आजमगढ़	अभिमन्यु सिंह, श्री	फतेहपुर
अमर सिंह, श्री	बिजनौर	अरविन्द कुमार, डा०	ललितपुर
अशोक कुमार सिंह, श्री	रायबरेली	उमा कान्त यादव, श्री	जौनपुर
कृष्ण किंकर सिंह, श्री	बस्ती	कंवर पाल मास्टर, श्री	सहारनपुर
छत्र पाल वर्मा, श्री	फतेहपुर	कुंवर रेवती रमण सिंह	
जागेश्वर प्रसाद उर्फ भाई जी, श्री	फतेहपुर	उर्फ मणि जी, श्री	इलाहाबाद
दुर्गा प्रसाद यादव, श्री	आजमगढ़	चन्द्र भान मौर्य, श्री	आगरा
नरेन्द्र कुमार सिंह गौर, डा०	इलाहाबाद	पूरन चन्द्र शर्मा, श्री	अल्मोड़ा
नारायण दत्त तिवारी, श्री	नैनीताल	प्रेमलता कटियार, श्रीमती	कानपुर नगर
पूरन सिंह बुन्देला, श्री	ललितपुर	बिन्दुलाल, श्री	गोण्डा
बाबू राम, एम० काम०, श्री	जालौन	मनव्वर हसन, श्री	मुजफ्फरनगर
बृज राज त्रिपाठी, श्री	बहराइच	मुन्ना चौहान, श्री	देहरादून
मदन भैया, श्री	मेरठ	मोहम्मद वसीम हाजी, श्री	रायबरेली
मन्नू लाल कुरील, श्री	बांदा	मयंकर सिंह, श्री	बहराइच
मोहम्मद आजम खां, श्री	रामपुर	रमेश चन्द्र द्विवेदी, श्री	बांदा
रमाकान्त यादव, श्री	आजमगढ़	राम गोविन्द चौधरी, श्री	बलिया
रवीन्द्र शुक्ल, श्री	झांसी	राम सरन वर्मा, श्री	पीलीभीत
राम सरन सिंह, श्री	अलीगढ़	लल्लू सिंह, श्री	फैजाबाद
विजयपाल सिंह तोमर, श्री	मेरठ	विक्रमादित्य पाण्डेय, श्री	बलिया
वीरेन्द्र सिंह, श्री	मुजफ्फरनगर	बिजेन्द्र कुमार, श्री	गाजियाबाद
शारदा चौहान, श्रीमती	गाजीपुर	शिव कान्त, श्री	प्रतापगढ़
हर नारायण सिंह, श्री	रायबरेली	सतीश महाना, श्री	कानपुर नगर
		समीउल्ला, श्री	गोण्डा

प्रवीण अहुजा

विषय-सूची

विषय			पृष्ठ संख्या
उपस्थित सदस्य	...	...	क
वर्तमान विधान सभा के सदस्य श्री परमाई लाल के निधन पर शोकोद्गार	...		1-3
विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री राम नन्दन सिंह, श्री पुरुषोत्तम दास, श्री नरायण हरि शर्मा, श्री गोमती यादव, श्री सोनपाल, श्री राजा राम शास्त्री, श्री राम सनेही भारतीय, श्री ईश्वर शरण, कु० श्रद्धा देवी, श्री राम शिरोमणि दुबे, श्री शारदा प्रसाद रावत, श्री महेन्द्र रिपुदमन सिंह राजा, श्री गिरजा प्रसाद, श्री कृष्ण बह प्र, श्री चन्द्र सिंह रावत, श्री किन्दर लाल, श्री भगवती चरण निर्मोह., राजा जगदीश नारायण दत्त सिंह, श्री असगर अली, श्री राम प्रकाश यादव, श्री ईश्वरी सिंह, श्री सुरथ बहादुर शाह, श्री रामायण राय, श्री कल्याण सिंह सोलंकी के निधन तथा गढ़वाल क्षेत्र के भूकम्प में मृतकों के प्रति शोकोद्गार			4–15
उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व राज्यपाल श्री गणपति राव देव जी तपासे के निधन पर शोकोद्गार	...	...	15–18
निधन की सूचनाओं .को शीघ्र दिये जाने हेतु श्री अध्यक्ष द्वारा शासन को निर्देश	...	...	
कार्य मंत्रणा समिति की बैठक की सूचना	...	...	

प्रमाणित प्रतिलिपि

मंगलवार, दिनांक ११ फरवरी, १९९२

विधान सभा की बैठक सभा मण्डप लखनऊ में ११ बजे दिन में अध्यक्ष श्री केशरी नाथ त्रिपाठी की अध्यक्षता में आरम्भ हुई।

वर्तमान विधान सभा के सदस्य श्री परमाई लाल के निधन पर शोकोद्गार

* मुख्य मंत्री (श्री कल्याण सिंह)–

मान्यवर, मैं निधन के निर्देश प्रस्तुत करने के लिये खड़ा हूँ । बड़े दुःख के साथ माननीय सदन को सूचित कर रहा हूँ कि श्री परमाई लाल का निधन १२ नवम्बर, १९९१ को प्रातः ८ बजकर ४० मिनट पर आशुलोक सफदरगंज इन्क्लेव अस्पताल, नई दिल्ली में हो गया। वे लगभग ५४ वर्ष के थे । श्री परमाई लाल का जन्म १९३७ को बक्सापुर जनपद हरदोई में हुआ था। उन्होंने हाई स्कूल तक शिक्षा प्राप्त की थी। श्री परमाई लाल सर्वप्रथम वर्ष १९६२ में निर्वाचन क्षेत्र गोपामऊ जनमद हरदोई से जनसंघ के प्रत्याशी के रूप में उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे उसके पश्चात् वे १९६७ में जनसंघ, मई १९८० में भारतीय जनता पार्टी, मार्च १९८५ में लोकदल, नवम्बर १९८९ में जनता दल तथा १९९१ में जनता पार्टी के टिकट पर पुनः विजयी हुए। १९७७ में जनता पार्टी से एवं १९८९ में जनता दल के टिकट पर हरदोई क्षेत्र लोक सभा के लिए निर्वाचित हुए थे परन्तु उन्होंने विधान सभा के सदस्य बने रहने के कारण लोक सभा की सदस्यता से त्याग-पत्र दे दिया था। अपना कार्य सर्वप्रथम गल्ला की आढ़त व्यवसाय से शुरू किया परन्तु शीघ्र ही राजनीति में प्रवेश कर जनसंघ पार्टी में सक्रिय रूप से हिस्सा लेने लगे। उन्होंने वर्ष १९८१ में ग्राम बदौली में परमाई लाल हाईस्कूल खुलवाया और उसके प्रबन्धक रहे। वे विधान सभा की विभिन्न समितियों के सदस्य रहे । श्री मुलायम सिंह मंत्रिमण्डल में लघु सिंचाई राज्य मंत्री रहे। वे राजनीति एवं समाज सेवा में विशेष रुचि रखते थे। श्री परमाई लाल जी के निधन से प्रदेश ने एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी खो दिया है। मान्यवर, मेरी आपसे प्रार्थना है कि मेरी और मेरे दल की सम्वेदनाएं स्वर्गीय श्री परमाई लाल जी के शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

* श्री राम आसरे वर्मा–

मान्यवर, माननीय परमाई लाल जी के निधन पर जो शोकोद्गार माननीय नेता सदन ने व्यक्त किए हैं उनसे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूँ। मान्यवर, परमाई लाल जी का जीवन जन-साधारण के साथ सदैव जुड़ा रहा। माननीय परमाई लाल जी यद्यपि ज्यादा पढ़े लिखे नहीं थे लेकिन शिक्षा के प्रति उनका बहुत लगाव था । उन्होंने स्वयं परमाई लाल हाईस्कूल के नाम से शिक्षण संस्था खोली। इसके अलावा हरदोई जनपद के सामाजिक, राजनैतिक संगठनों से उनका लगाव था। मैं उनके निधन पर शोक व्यक्त करते हुए यह अपेक्षा करता हूँ कि हमारे श्रृद्धा सुमन उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुँचाने की कृपा करेंगे।

* श्री प्रमोद तिवारी–

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं इस सदन के वरिष्ठ सदस्य परमाई लाल जी के निधन पर जो शोकाद्गार माननीय नेता सदन और श्री वर्मा जी ने व्यक्त किए हैं उनसे अपने और अपने दल को सम्बद्ध करता हूँ । मुझे बड़ा ही दुख है जो हमारे साथी रहे, इस विधान सभा के सदस्य रहे और इस तरह से हमसे रूठ कर चले गये। यह बहुत ही लोकप्रिय थे और इनकी लोकप्रियता का प्रमाण इनके चुनाव हैं, जनता ने इनको विश्वास दिया, जनता की इन पर अटूट निष्ठा थी। परमाई लाल जी के निधन से हरदोई की जनता को ही नहीं वरन् पूरे प्रदेश को क्षति हुई है जिसने एक कर्मठ नेता खो दिया है।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

हमारे सदन ने बहुत निर्भीक, निडर और साहसी साथी खो दिया है। मैंने परमाई लाल जी को मंत्री जी के रूप में इस सदन में कार्य करते हुए देखा है। मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि वह ऊँचे व्यक्तित्व के व्यक्ति थे और वह अपने दल से ऊपर उठकर सहयोग के लिए सदैव तत्पर रहते थे। मैं अपने ऐसे निडर साथी के लिए श्रद्धा के सुमन अर्पित करता हूँ और आपसे आग्रह करता हूँ कि उनके परिवार तक इन्हें पहुँचाने की कृपा करें।

श्री कैलाश नाथ सिंह यादव–

मान्यवर, भाई परमाई लाल जी के निधन से हम सब मर्माहत हुए हैं। माननीय नेता सदन, श्री राम आसरे वर्मा, माननीय नेता राष्ट्रीय कांग्रेस ने जो भावनायें व्यक्त की हैं उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूँ। परमाई लाल जी के साथ में काम करने का अवसर मुझे भी मिला। वह बहुत लोकप्रिय व्यक्ति थे। वह दो बार लोक सभा के सदस्य और छः बार विधान सभा के सदस्य चुने गये। मैं उन्हें व्यक्तिगत रूप से जानता हूँ। वह साहसी और निडर होने के साथ-साथ अपनी बात के धनी थे। ऐसे व्यक्ति राजनीति में कम ही होते हैं कि वह जो बात कहें उसे अमल भी करें। परमाई लाल जी ने पूरे जीवनकाल में जितनी बातों को कहा उनको पूरा भी किया। साधारण व्यापारी जीवन से राजनीति में प्रवेश करने वाले परमाई लाल जी ने अपने जनपद के अलावा आसपास के जिलों में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया था। मुझे उनके निधन का दुख है। जिन भावनाओं को मा० नेता सदन और श्री राम आसरे जी ने व्यक्त किया है उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह उनके शोक संतप्त परिवार को इस दुख को सहने की क्षमता प्रदान करें। हमारी भावनायें उनके शोक संतप्त परिवार को पहुंचाने की कृपा करें।

• श्री बेनी प्रसाद वर्मा–

मान्यवर, माननीय परमाई लाल जी इस विधान सभा के वरिष्ठतम सदस्यों में से थे। आज वह हम लोगों के बीच में नहीं हैं। इस संबंध में जो विचार माननीय मुख्य मंत्री जी ने, श्री राम आसरे वर्मा जी ने, नेता कांग्रेस पार्टी ने और अन्य नेताओं ने व्यक्त किये हैं मैं उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूँ। श्रीमन, आपसे यह कहना चाहता हूँ कि बहुत कम लोग होते हैं साधारण परिवारों में जो राजनीति में इतना सम्मान पाते हैं। माननीय परमाई लाल ने दलित वर्ग में जन्म लिया उसके बावजूद भी अपने व्यक्तित्व और जनसेवा के कारण ६ बार इस सदन के सदस्य रहे और २ बार लोक सभा के लिये निर्वाचित हुये। उनमें एक अभूतपूर्व संगठन क्षमता थी, हम लोगों का तो व्यक्तिगत रूप से बहुत नुकसान हुआ है, उनके निधन से। वह बड़े साहसी साथी थे हम लोगों से बिछुड़ गये। श्रीमन्, परमाई लाल जी माननीय मुलायम सिंह यादव जी के मंत्रिमंडल के सदस्य भी रहे और एक मंत्री के रूप में भी उन्होंने प्रदेश की सेवा की है। आज उनके निधन से पूरे प्रदेश की एक अपूर्णनीय क्षति हुयी है,

विशेष रूप से दलित वर्ग का एक बहुत बड़ा नेता हम लोगों के बीच से उठ गया है। मेरा आपसे अनुरोध है कि हमारे और हमारे दल की शोक संवेदनायें उनके परिवार तक भिजवाने का कष्ट करें।

श्री राम लखन–.

मान्यवर, स्वर्गीय श्री परमाई लाल जी के निधन पर माननीय नेता सदन, श्री राम आसरे वर्मा, नेता राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी, नेता जनता दल (अ), माननीय बेनी प्रसाद वर्मा जी ने जो संवेदनायें व्यक्त की हैं मैं उससे अपने को तथा अपने दल को सम्बद्ध करता हूँ। श्रीमान, परमाई लाल जी ने विभिन्न पार्टियों में रहकर जिस तरह से समाज की सेवा की है वह अपने में अभूतपूर्व मिसाल है। मेरा आपसे आग्रह है कि आप मेरी तरफ से, मेरे दल बहुजन समाज पार्टी की तरफ से परिवार-जनों तक मेरी संवेदनायें भेजने का कष्ट करें।

• वक्ता ने भाषण का पुनरीक्षण नहीं किया।

*श्री ऊदल–

माननीय अध्यक्ष जी, स्वर्गय परमाई लाल जी क बारे में जो शोकोद्गार माननीय नेता सदन तथा अन्य माननीय नेताओं ने व्यक्त किये हैं मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूँ। श्री परमाई लाल जी के साय मेरा भी वर्षो तक संबंध इस सदन के अंदर रहा है। वह बहुत ही अच्छे कर्मठ कार्यकर्ता थे और नेता भी थे। उनकी रुचि शिक्षा क्षेत्र में बहुत ज्यादा थी। उन्होंने अपने नाम से एक हाईस्कूल की स्थापना करके वहां की जनता को शिक्षा ग्रहण करने के लिये प्रेरित किया। मान्यवर, वह बहुत ही सुशील तथा मिलनसार थे । उनके निधन से जैसा कि माननीय बेनी प्रसाद वर्मा जी ने कहा, दलितों का बहुत नुकसान हुआ है और सार्वजनिक क्षेत्र का बहुत बड़ा नुकसान हुआ है। एक अच्छा, कर्मठ साथी हमारे बीच से जब उठ जाता है तो शोक और दुख होना स्वभाविक है। इसलिये मैं अपनी तरफ से, अपने दल की तरफ से उनके प्रति शोक संवेदना व्यक्त करता हूं और आपसे निवेदन करता हूँ कि उनके दुखी परिवार को हमारी शोक संवेदना पहुंचाने का कष्ट करें।

* श्री दीनानाथ सिंह यादव–

मान्यवर, स्वर्गीय परमाई लाल जी के बारे में माननीय मुख्य मंत्री जी ने, माननीय नेता विरोधी दल ने तथा अन्य नेताओं ने जो शोकोद्गार प्रकट किये हैं मैं उससे अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूँ। मान्यवर, परमाई लाल जी की लोकप्रियता के बारे में इससे बड़ा सबूत और कोई नहीं हो सकता कि वह एक ही साथ लोक सभा और विधान सभा का चुनाव जीत गये।

एक बार नहीं, छः-छः बार विधान सभा के लिये निर्वाचित हुए। मैं ऐसे लोकप्रिय नेता को जो आज हमारे बीच नहीं रहे, अपनी तरफ से, अपनी पार्टी की तरफ से शोक प्रकट करते हुए आप से निवेदन करता हूँ कि हमारी तरफ से, हमारी पार्टी की तरफ से उनके परिवार तक शोक संवेदनाएं पहुंचाने का कष्ट करेंगे।

* श्री झाऊ लाल यादव–

श्रीमन्, दिवंगत भाई परमाई लाल जी से हमारे व्यक्तिगत संबंध थे। हमने मुलायम सिंह जी के नेतृत्व में लगभग २० वर्ष बड़ा संघर्ष झेलते हुए प्रदेश की राजनीति में सक्रिय रूप से कार्य किया। वह एक कर्मठ, त्यागी और साहसी प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। उनके निधन से हमारी व्यक्तिगत रूप से क्षति हुई है और उनके निधन की संवेदना में हम लोग हार्दिक शोक व्यक्त करते है और अपने को सभी दलों के नेताओं की भावनाओं से सम्बद्ध करते हुए आपसे निवेदन करते हैं कि हमारी संवेदना उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

श्री अध्यक्ष–

हरदोई में जन्मे श्री परमाई लाल जी का १२ नवम्बर, १९९१ को मात्र ५४ वर्ष की अवस्था में ही निधन हो गया। श्री परमाई लाल जी इस सदन के बहुत ही अनुभवी सदस्यों में से थे। छः बार इस सदन के सदस्य निर्वाचित हुए थे। दो बार लोकसभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे और हम सबको यह आशा थी कि इस सदन के सदस्य के रूप में लोक सभा के सदस्य के रूप में और प्रदेश के एक अभूतपूर्व मंत्रि परिषद् के सदस्य के रूप में उनके जो अनुभव हैं, उससे यह सदन लाभान्वित होगा। ईश्वर को यह स्वीकार नहीं था और अब वह हमारे बीच में नहीं हैं। यद्यपि परमाई लाल जी की शिक्षा हाईस्कूल स्तर तक ही थी, परन्तु शिक्षा के प्रति उनका बहुत लगाव था और इस बात के लिये चिंतित प्रतीत होते थे कि शिक्षा का विस्तार कैसे हो और इसके लिये एक हाईस्कूल की स्थापना उन्होंने की थी। श्री परमाई लाल के निधन से हरदोई जनपद की हानि हुई, यह सदन उनकी सेवाओं से वंचित हो गया है। मैं माननीय नेता सदन और अन्य नेताओं की भावनाओं के साथ अपने को सम्बद्ध करते हुए आपकी शोक संवेदनाओं को उनके परिवार तक पहुंचा दूंगा। आइये हम उनके प्रति अपनी श्रृद्धांजलि अर्पित करते हुए एक मिनट मौन खड़े होकर श्रृद्धांजलि अर्पित करें।

(सभी सदस्य एक मिनट के लिये मौन खड़े हुये)

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्रीराम नन्दन सिंह, श्री पुरुषोत्तम दास, श्री नारायण हरि शर्मा, श्री गोमती यादव, श्री सोनपाल, श्री राजा राम शास्त्री, श्री राम सनेही भारतीय, श्री ईश्वर शरण, कु० श्रद्धा देवी, श्री राम शिरोमणी दुबे, श्री शारदा प्रसाद रावत, श्री महेन्द्र रिपुदमन सिंह राजा, श्री गिरजा प्रसाद, श्री कृष्ण बहादुर मिश्र, श्री चन्द्र सिंह रावत, श्री किन्दर लाल, श्री भगवती चरण निर्मोही, श्री राजा जगदीश नारायण दत्त सिंह, श्री असगर अली, श्री राम प्रकाश यादव, श्री ईश्वरी सिंह, श्री सुरथ बहादुर शाह, श्री रामायण राय, श्री कल्याण सिंह सोलंकी के निधन तथा गढ़वाल क्षेत्र के भूकम्प से मृतकों के प्रति शोकोद्गार

मुख्य मंत्री (श्री कल्याण सिंह)–

मान्यवर, इस सम्मानित सदन के २४ भूतपूर्व माननीय सदस्य हमारे बीच से उठ गये हैं, हमारे लिए, प्रदेश के लिए, समाज के लिए यह भारी क्षति है। श्री राम नन्दन सिंह (वाराणसी), श्री पुरुषोत्तम दास (मिर्जापुर), श्री नारायण हरि शर्मा (अलीगढ़), श्री गोमती यादव(आजमगढ़), श्री सोनपाल उर्फ सोहन लाल पिपले (बदायूं), श्री राजा राम शास्त्री (कानपुर), श्री राम सनेही भारतीय (बांदा), श्री ईश्वर शरण (गोण्डा), कु० श्रद्धा देवी (मेरठ), श्री राम शिरोमणि दुबे (जौनपुर), श्री शारदा प्रसाद रावत (गोरखपुर), श्री महेन्द्र रिपुदमन सिंह राजा (आगरा), श्री गिरजा प्रसाद (बाराबंकी), श्री कृष्ण बहादुर मिश्र (बहराइच), श्री चन्द्र सिंह रावत(गढ़वाल), श्री किन्दर लाल (हरदोई), श्री भगवती चरण निर्मोही (गढ़वाल), श्री राजा जगदीश नारायण दत्त सिंह (खीरी), श्री असगर अली (देवरिया), श्री राम प्रकाश यादव (मथुरा), श्री ईश्वरी सिंह (बुलन्दशहर), श्री सुरथ बहादुर शाह (लखीमपुर खीरी), श्री रामायण राय (देवरिया), श्री कल्याण सिंह सोलंकी (बरेली), ये २४ भूतपूर्व माननीय सदस्य आज हमारे बीच में नही हैं, इसका हमको बहुत गहरा दुःख है। श्री राम नन्दन सिंह का निधन १४ जनवरी, १९८७ को हो गया। उनका जन्म १९०५ में ग्राम ददवता चकिया, जनपद वाराणसी में हुआ था। वे सर्वप्रथम १९५० में विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे। तत्पश्चात् वे १९५२ से १९६४ तक विधान परिषद् के सदस्य भी रहे। राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भाग लेते हुए कई बार जेल की सजा काटी। स्वतंत्रता आंदोलन में पूर्ण तनमन से बढ़–चढ़ करके उन्होंने भाग लिया। वे बनारस राज्य कांग्रेस कमेटी में ८ वर्ष तक अध्यक्ष रहे। श्री सिंह कई सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े रहे। उनके जाने से शिक्षा जगत को भारी क्षति हुई है।

श्री पुरुषोत्तम दास जी का निधन २८ जुलाई, १९९० को हो गया। वे लगभग ६५ वर्ष के थे। उनका जन्म २९ मार्च, १९२६ को ग्राम सबरी, जनपद मिर्जापुर में हुआ था। वे १९७५, १९७७, १९८० में इस माननीय सदन के सदस्य रहे। उन्होंने अनेक राजनीतिक आंदोलनों में भाग लिया।

श्री नारायण हरि शर्मा जी का निधन ११ जुलाई, १९९१ को हो गया। उनका जन्म अक्टूबर, १९१८ में ग्राम बोनई वाया हसायन, अलीगढ़ में हुआ था। वे १९७४ और १९८५ में इस सदन के सदस्य चुने गये। उनका कई शिक्षण संस्थाओं से संबंध था। किसानों के बारे में जब कभी कोई आन्दोलन हुआ श्री नारायण हरि शर्मा ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया और वे अच्छे नेता माने जाते थे। वे बहुत ही मौलिक चिन्तन वाले व्यक्ति थे, विशेषकर किसानों के बारे में।

श्री गोमती यादव (आजमगढ़) का निधन ३० जुलाई, १९९१ को हो गया। उनका जन्म १ जुलाई, १९५८ में हुआ था। उन्होंने एल-एल०बी० और आचार्य की उपाधि प्राप्त की थी। वे १९८९ के सामान्य निर्वाचन में निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में सर्वप्रथम इस सदन के सदस्य निर्वाचित हुए थे। जनसेवा में उनकी विशेष रुचि थी।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

श्री सोनपाल जी उर्फ सोहन लाल पिपले (बदायूं) का निधन ५ अगस्त, १९९१ को हो गया। वे ५१ वर्ष के थे। उनका जन्म १२ सितम्बर, १९४० को हुआ था। वे १९७७ में बदायूं से इस माननीय सदन के सदस्य निर्वाचित हुए थे। उनका सहकारिता तथा कृषि संबंधी कार्यों में गहरा लगाव था। उन्होंने उक्त दोनों विषयों पर डिप्लोमा भी प्राप्त किया था। लघु उद्योग में भी वे विशेष रुचि रखते थे। वे कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाज सेवी थे।

श्री राजा राम शास्त्री का निधन २१ अगस्त. १९९१ को नई दिल्ली में हो गया। वे लगभग ८७ वर्ष के थे। उनका जन्म १९०५ में जनपद इटावा मं हुआ था। वे १९३७, १९४६ में इस सदन के सदस्य निर्वाचित हुए तथा १९५८ में विधान परिषद के सदस्य रहे। वे द्वितीय एवं पांचवी लोक सभा के सदस्य भी थे। उन्होंने १९३४ से ५७ तक समाजवादी दल में भी कार्य किया। वे कुशल राजनेता, शिक्षाविद् तथा स्वतंत्रता सेनानी थे।

श्री राम सनेही भारतीय जी (बांदा) का निधन २५ अगस्त, १९९१ को हो गया। उनका जन्म १९१२ में पलहरी जनपद बांदा में हुआ था। वे १९५२ और १९५७ में इस माननीय सदन के सदस्य निर्वाचित हुए थे। वे एक कमर्ठ, ईमानदार तथा साहसी स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्होंने १२ वर्ष की अल्पायु में ही स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेना शुरू कर दिया था। फलस्वरूप वे कई बार जेल भी गये। वे सामाजिक सेवा, अध्ययन, ग्रामीण खेल कूद में विशेष रुचि रखते थे।

श्री ईश्वर शरण जी का निधन २६ अगस्त, १९९१ को हो गया। उनका जन्म ५ अगस्त, १९०१ को हुआ था। वे १९३७, १९४६, १९६२, १९६७ में इस माननीय सदन के सदस्य चुने गये थे। वे महान स्वतंत्रता सेनानी एवं राजनीतिज्ञ थे। उन्होंने वर्ष १९२१ में जन आंदोलन, १९३० में नमक सत्याग्रह एवं १९४० में व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलनों में सक्रिय रूप से भाग लिया। फलस्वरूप कई बार जेल गये। वे १९४५ में नगरपालिका, गोण्डा के अध्यक्ष, आर्य समाज, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी कल्याण परिषद् तथा मध्य सागर गोवर्धन ट्रस्ट के अध्यक्ष भी थे। आज हमारे बीच में वे नहीं है।

कुमारी श्रद्धा देवी जी का निधन २६ अगस्त, १९९१ को हुआ । उनका जन्म अक्टूबर, १९१६ को ग्राम कथियावली जिला बुलन्दशहर में हुआ था। वे १९५७ में, १९६२ में मेरठ से इस सदन की सदस्या निर्वाचित होकर आई थीं उन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन में और स्वतंत्रता संग्राम में पूरी सक्रियता से भाग लिया था।

श्री राम शिरोमणि दुबे जी का निधन ७ सितम्बर, १९९१ को हो गया । इनका जन्म जनपद जौनपुर में हुआ था। वे १९६९, १९७४, १९७७ एवं १९८० में इस माननीय सदन के सदस्य निर्वाचित होकर आये थे। १९४२ के आन्दोलन में उन्हें फांसी की सजा हुई थी। स्वतंत्रता के बाद वे जेल से छूटे थे। एक ऐसे कमर्ठ नेता जिन्होंने अपने जान की बाजी लगाकर भी भारतमाता को विदेशियों के शिकंजे से मुक्त कराने में अपनी अहम भूमिका निभाई, हमें दुख है कि आज वे हमारे बीच में नहीं है ।

श्री शारदा प्रसाद रावत की ८ सितम्बर, १९९१ की सायं हत्या कर दी गयी। उनका जन्म १ जनवरी, १९४१ को ग्राम भीटी रावत, तहसील सहजनवां, गोरखपुर में हुआ था। वे १९७४, १९७७, एवं १९८९ में इस सदन के सदस्य निर्वाचित होकर आये थे। वे महान समाजसेवी और बहुत ही लोकप्रिय थे। वे राज्यमंत्री के उत्तरदायित्व को भी सफलतापूर्वक निभा चुके थे।

श्री राजा महेन्द्र रिपुदमन सिंह जी का आगरा में निधन १० सितम्बर, १९९१ को हुआ। इनका जन्म २१ अक्टूबर, १९३० को आगरा में हुआ था। वे १९५७, १९७४, १९७७ एवं १९८० में इस सदन के सदस्य निर्वाचित होकर आये थे। राज्यमंत्री के पद पर रहकर उन्होंने बड़ी कुशलता से प्रशासनिक क्षमता का परिचय दिया था और कई देशों की यात्राएं भी वे कर चुके थे।

श्री गिरजा प्रसाद जी का निधन २६ सितम्बर, १९९१ को हुआ। उनका जन्म १९१० में ग्राम गनेशपुर जनपद बाराबंकी में हुआ था। वे सन् १९६२ में इस माननीय सदन के सदस्य निर्वाचित होकर आये थे। स्वतंत्रता आन्दोलन में वे बढ़-चढ़ कर भाग लेते रहे। स्वतंत्रता संग्राम में भी उनकी भूमिका अनुकरणीय एवं सराहनीय रही है।

श्री कृष्ण बहादुर मिश्र जी का निधन १ अक्टूबर, १९९१ को हो गया। उनका जन्म ग्राम हमीरपुर जनपद बहराइच में सन् १९३४ में हुआ था। वे सन् १९६७ में इस माननीय सदन के सदस्य निर्वाचित होकर आये थे। वे उपमंत्री भी रहे और आन्दोलन में भाग लेने के कारण अनेकों बार वे जेल जा चुके थे।

श्री चन्द्र सिंह रावत का निधन ४ अक्टूबर, १९९१ को हुआ था। उनका जन्म ४ अप्रैल, १९०९ को जनपद गढ़वाल में हुआ था। वे १९५२, १९५७, १९६२ तथा १९६७ में इस सदन के सदस्य निर्वाचित होकर आये थे, वे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे और पर्वतीय क्षेत्र में विशेष रूप से लोगों ने उनके नेतृत्व को स्वीकारा था। पर्वतीय अंचल के विकास के लिए उन्होंने जी जान से काम किया।

श्री किन्दर लाल जी का निधन ५ अक्टूबर, १९९१ को हो गया। उनका जन्म १७ जून, १९१४ को ग्राम दौलतपुर जनपद हरदोई में हुआ था। सन् १९५२ में इस माननीय सदन के सदस्य निर्वाचित होकर आये थे। सन् १९६२ से १९७७ तक तथा सन् १९८४ से १९८९ तक वे सांसद भी रहे। वे एक कुशल राजनीतिज्ञ, सामाजिक एवं धार्मिक प्रवृत्ति के नेता थे।

श्री भगवती चरण निर्मोही का निधन १० अक्टूबर, १९९१ को हो गया। उनका जन्म ११ सितम्बर, १९११ को हुआ था। वे १९७४ एवं १९७७ में इस सदन के सदस्य निर्वाचित होकर आये थे। वे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। कई संस्थाओं में उन्होंने बढ़-चढ़ कर भाग लिया और जनसेवा की।

श्री जगदीश नारायण सिंह जी का निधन २० अक्टूबर, १९९१ को हो गया। उनका जन्म ९ मार्च, १९२७ को जनपद बहराइच में हुआ था। वे १९५७ में इस सदन के सदस्य निर्वाचित हुए थे। वे सामाजिक और धार्मिक मामलों में विशेष अभिरुचि लेते थे, राजनीतिक क्षेत्र में उनकी विशेष भूमिका थी।

श्री असगर अली जी (देवरिया) का निधन १८ नवम्बर, १९९१ को हो गया। उनका जन्म ७ सितम्बर, १९४५ को देवरिया में हुआ था। १९८९ में वे इस सदन के सदस्य निर्वाचित हुए थे। सामाजिक क्षेत्र में, राजनीतिक क्षेत्र में उनकी विशेष अभिरुचि थी। वे न केवल अपने क्षेत्र के नेता थे, अपितु उन्होंने पूरे जनपद की सेवा की और इस माननीय सदन के माध्यम से प्रदेश की सेवा करने में भी वे अग्रणी रहे।

श्री राम प्रकाश यादव जी (मथुरा) का निधन ४ दिसम्बर, १९९१ को हो गया। उनका जन्म २२ फरवरी, १९४२ को मथुरा में हुआ था। १९७४ में वे इस सम्मानित सदन के सदस्य निर्वाचित होकर आये। सामाजिक क्षेत्र में, राजनीतिक क्षेत्र में उन्होंने अग्रणी भूमिका का निर्वहन किया। वे न केवल अपने क्षेत्र में लोकप्रिय थे, अपितु पूरे मथुरा जनपद में वे लोकप्रिय थे और मथुरा जनपद के बाहर के काफी लोक प्रिय थे। मैं उनको व्यक्तिगत रूप से जानता था। उनका व्यवहार ऐसा था कि एक बार यदि कोई व्यक्ति उनके सम्पर्क में किसी कार्य से आ गया तो वह व्यक्ति उनको कभी छोड़ नहीं पाता था। ऐसे व्यक्ति के उठ जाने से क्षति हुई है।

श्री रामायण राय जी का निधन ३ जनवरी, १९९२ को हो गया। उनका जन्म १५ जनवरी, १९२० को देवरिया में हुआ था। १९५७, १९६२, १९६७ एवं १९७४ में वे इस सदन के सदस्य निर्वाचित होकर आये। १९८० से १९८५ तक वे लोक सभा के सदस्य के रूप में काम करते रहे।

वे यहां राज्यमंत्री भी रहे। वे एक अच्छे समाजसेवी व अच्छे लेखक थे। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के साथ- साथ वे बहुत ही सूझबूझ के व्यक्ति थे, बहुत ही शालीन थे। मुझे याद है कि वे जब यहां बोलते थे तो उनकी भाषा कितनी संयत रहती थी। भले ही कभी आलोचना में तथ्यों के आधार पर स्वर तीखा हो लेकिन भाषा शालीन रहती थी। वे बहुत ही शालीन और सूझबूझ के व्यक्ति थे।

श्री कल्याण सिंह सोलंकी जी का निधन १५ जनवरी, १९९२ को हो गया। उनका जन्म जुलाई, १९४४ में बरेली में हुआ था । १९८० में वे इस सम्मानित सदन के सदस्य निर्वाचित होकर आये थे। उसके पश्चात् वे लोक सभा के भी सदस्य रहे। वे समाजसेवी थे, कुशल कार्यकर्ता थे। अपने क्षेत्र में ही नहीं वरन् पूरे जनपद में वे बहुत ही लोकप्रिय थे।

इसी के साथ-साथ मान्यवर, मैं आपकी विशेष अनुमति के आधार पर एक शोक प्रस्ताव के बारे में दो शब्द और कहना चाहता हूँ। अपने प्रदेश के अंदर गढ़वाल में जो भयंकर भूकम्प आया उससे कितनी ही जाने गयीं, भारी जन--धन की क्षति हुई है। यह एक ऐसी क्षति है कि उसको पूरा कर पाना कठिन है। बहुत ही हृदय विदारक दैवी आपदा हमारे सामने आयी। उस दारुण दुर्घटना में, दैवी आपदा के कारण जो भयंकर जन-धन की क्षति हुई है, समूचा राष्ट्र उनकी सहानुभूति में खड़ा है। उनके प्रति भी मैं शोक संवेदना व्यक्त कर रहा हूँ।

श्रीमन्, मैं इन सभी के प्रति अपनी और अपने दल की ओर से बड़े सम्मान के साथ शोक संवेदना व्यक्त कर रहा हूँ और प्रभू से प्रार्थना करता हूँ कि इन दिवंगत आत्माओं को शांति और सद्गति प्रदान करे और उनके शोकाकुल परिवारजन को इस दुख को सहन करने का धैर्य और साहस प्रदान करे। आपसे यह प्रार्थना है कि इन शोक संतप्त परिवारजन तक मेरी और मेरे दल की शोक संवेदनायें भेजने की कृपा करें।

* श्री राम आसरे वर्मा--

मान्यवर, स्व० श्री रामनन्दन सिंह (वाराणसी), स्व० श्री पुरुषोत्तम दास (मिर्जापुर), स्व० श्री नारायण हरि शर्मा (अलीगढ़), स्व० श्री गोमती यादव (आजमगढ़), स्व० श्री सोनपाल उर्फ सोहन लाल पिपले (बदायूं), स्व० श्री राजाराम शास्त्री (कानपुर), स्व० श्री राम सनेही भारतीय (बांदा), स्व० श्री ईश्वर शरण (गोंडा), स्व० कु० श्रृद्धा देवी (मेरठ), स्व० श्री राम शिरोमणि दुबे (जौनपुर), स्व० श्री शारदा प्रसाद रावत (गोरखपुर), स्व० श्री महेन्द्र रिपुदमन सिंह राजा (आगरा), स्व० श्री गिरजा प्रसाद (बाराबंकी) स्व० श्री कृष्ण बहादुर मिश्र (बहराइच), स्व० श्री चन्द सिंह रावत (गढ़वाल), स्व० श्री किन्दर लाल (हरदोई), स्व० श्री भगवती चरण "निर्मोही" (गढ़वाल), स्व० श्री राजा जगदीश नारायण दत्त सिंह (खीरी), स्व० श्री असगर अली (देवरिया), स्व० श्री राम प्रकाश यादव (मथुरा), स्व० श्री ईश्वरी सिंह (बुलन्दशहर), स्व० श्री सुरेश बहादुर सिंह (लखीमपुर खीरी), स्व० श्री रामायण राय (देवरिया), स्व० श्री कल्याण सिंह सोलंकी (बरेली) तथा गढ़वाल मण्डल में भूकम्प के शिकार हुए तमाम नागरिकों के सिलसिले में जो शोकोद्गार माननीय मुख्य मंत्री जी ने व्यक्त किए हैं, उनसे मैं अपने को तथा अपने दल को सम्बद्ध करता हूँ। मान्यवर, जिन २४ स्वर्गीय विभूतियों को श्रद्धांजलि अर्पित की जा रही है इन सबकी राजनैतिक और सामाजिक क्षेत्रों में सेवायें सराहनीय रही हैं। इनमें से अनेक ऐसे लोग भी हैं जिनका स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के रूप में योगदान रहा है। मान्यवर, इसमें श्री शारदा प्रसाद रावत का मैं विशेष रूप से उल्लेख करना चाहूँगा। इनकी हत्या बड़ी रहस्यमय परिस्थितियों में की गयी थी और आज तक उस रहस्य को सुलझाने में यह शासन और प्रशासन सक्षम नहीं हो पाया है। यह कोई शिकायत का अवसर नहीं है लेकिन यह एक चिंता का विषय है कि जिन्होंने अपना

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

जीवन जनता के लिए समर्पित कर दिया, राजनीति के लिए समर्पित कर दिया उनके साथ इस प्रकार का हादसा हुआ यह एक बहुत ही चिन्ता का विषय है। मेरा माननीय मुख्य मंत्री जी से आग्रह है कि वे इन बातों की तरफ ध्यान दें और यह प्रयास करें कि जो लोग इस प्रकार अपना जीवन समर्पित करते हैं वे इस प्रकार की परिस्थितियों का शिकार न होने पायें।

मान्यवर, माननीय रिपुदमन सिंह जी राज्य मंत्री रहे हैं और बड़े दुख के साथ मुझे यह कहना पड़ रहा है कि उनकी मृत्यु के दिन से तेरहवीं तक कोई भी शोक संवेदना लेकर उनके घर तक नहीं पहुंचा है। यह बड़े दुख की बात है तथा इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। इन सबके साथ मैं अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और आपसे आग्रह करता हूँ कि श्रद्धांजलि के यह पुष्प उन शोक संतप्त परिवारों तक पहुंचाने का कष्ट करें।

* श्री प्रमोद तिवारी–

मान्यवर, जिन २४ भूतपूर्व विधायकों के प्रति शोक संवेदना के दो शब्द माननीय नेता सदन और माननीय राम आसरे वर्मा जी ने व्यक्त किए हैं, उससे मैं अपने को तथा अपने दल को सम्बद्ध करता हूँ और आपसे आग्रह करता हूँ कि हमारे दल की शोक संवेदनाएं उनके परिवारों तक पहुंचा दें। मान्यवर, इन सबमें विशिष्ट शख्सियत रही है श्री रामनन्दन सिंह जी की। उन्होंने एक अध्यापक के रूप में अपना जीवन शुरू किया था। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के रूप में पांच वर्ष का कठोर कारावास भी काटा था। इसी तरह से श्री पुरुषोत्तम दास जी भी थे। वे हमारी विधान सभा के सदस्य भी थे। उनकी लोकप्रियता पूरे मिर्जापुर में व्याप्त थी और उसी लोकप्रियता का यह परिणाम है कि आज उनका पुत्र भी इस विधान सभा का सदस्य है। इसी तरह से श्री नारायण हरि शर्मा भी हैं। वे एक महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी रहे। वे अलीगढ़ में जेल भरो आन्दोलन १९७७-७८ में बन्दी भी हुए थे। उनके निधन से भी हमें बहुत दुख हुआ है। श्री गोमती यादव एक निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में इस सदन के सदस्य रहे। वे एक कुशल राजनीतिज्ञ थे। श्री सोनपाल उर्फ सोहन लाल पिपले जनपद बदायूं से जनता पार्टी के टिकट पर चुनकर आये थे। उनके निधन से बदायूं ने अपना एक साथी खो दिया है। श्री राजाराम शास्त्री जी का मैं विशेष रूप से उल्लेख करना चाहूंगा इन्होंने १९३० में सत्याग्रह आंदोलन में भाग लिया। वे एक महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। उन्होंने मजदूरों के हितों के लिए लड़ाई लड़ी।

इसी के साथ-साथ श्री राम सनेही भारतीय जी का जो निधन हुआ है, उनके रूप में, निश्चित रूप से बाँदा जनपद ने एक कुशल समाजसेवी खोया है। इसी प्रकार श्री ईश्वर शरण इस विधान सभा के कई बार सदस्य रहे, वह एक अच्छे संसदीय ज्ञाता थे। मान्यवर, कु० श्रद्धा देवी के निधन से केवल मेरठ जनपद ने ही नहीं, बल्कि पूरे प्रदेश ने एक अच्छी समाजसेविका और संसदीय ज्ञाता को खो दिया है। श्री राम शिरोमणि दुबे, जिनके स्वतंत्रता संग्राम में दिये गये योगदान को सिर्फ इसी बात से आंका जा सकता है कि उन्हें बरतानिया सरकार ने फांसी की सजा सुनाई थी, जिसे सुप्रीम कोर्ट ने बाद में आजीवन कारावास में बदल दिया था, उनके निधन से पूरे प्रदेश ने एक महान स्वतंत्रता सेनानी को खो दिया है। श्री शारदा प्रसाद रावत जी की हत्या जिन परिस्थितियों में की गई, उसे व्यक्त करने के लिये मेरे पास शब्द नहीं हैं, मान्यवर, उनके निधन से एक संसदीय ज्ञाता को हमने खो दिया है। श्री महेन्द्र रिपुदमन सिंह राजा के रूप में आगरा ने एक कुशल समाजसेवी को खोया है। श्री गिरजा प्रसाद जी, श्री कृष्ण बहादुर जी, श्री चन्द्र सिंह रावत, श्री किन्दर लाल, श्री भगवती चरण निर्मोही, श्री जगदीश नारायण दत्त सिंह, श्री असगर अली जी इस विधान सभा के सदस्य रहे, उनके प्रदेश के लिये योगदान को आसानी से भुलाया नहीं जा सकता। श्री रामप्रकाश यादव जी, श्री ईश्वरी सिंह, श्री सुरथ बहादुर शाह ने भी समाज

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

की सेवा की है और उन्हें भी एक कुशल समाजसेवी के रूप में जाना जायेगा। मान्यवर, श्री रामायण राय समाजवादी आन्दोलन के जनक थे और उनके निधन से समाजवादी आन्दोलन को निश्चित रूप से गहरा आघात लगा है। एक मंत्री के रूप में, विधायक के रूप में पूर्वांचल के विकास के लिये उन्होनें जो योगदान किया है, उसके लिये हम सदैव उनके ऋणी रहेंगे।

मान्यवर, जिन्दगी और मौत पर किसी का बस नहीं होता, लेकिन किसी की मौत को कुछ दिनों के लिये बचाया भी जा सकता था, इसी कड़ी में मैं श्री कल्याण सिंह सोलंकी का जिक्र करना चाहूंगा, जिन्हें अल्पआयु में ही अपने जीवन से हाथ धोना पड़ा। मुझे यह कहने में दुख नहीं है कि यदि सरकार प्रयास करती, तो उनके जीवन को बचाया जा सकता था। उन्होंने अपने जीवन में सुरक्षा की मांग की थी, परन्तु उन्हें सुरक्षा प्रदान करने में शायद सरकार असमर्थ थी। मान्यवर, राजनीति में हिंसा का कोई स्थान नहीं है और जो लोग समाजसेवा से जुड़े रहते हैं, सरकार की ओर से उनके लिये पूरी सुरक्षा भी होनी चाहिये। श्री शारदा प्रसाद रावत, श्री कल्याण सिंह सोलंकी के निधन से हम एक बार फिर सोचने के लिये मजबूर हुये हैं कि क्या हम समाज सेवियों को निर्मम हत्यारों को यूं ही सौंपते रहेंगे या उसके लिये कोई कदम भी उठायेंगे। मैं अपनी ओर से, अपने दल की ओर से इन सभी भूतपूर्व सदस्यों को हृदय से सम्मान व्यक्त करते हुये, श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं।

मान्यवर, गढ़वाल में आये भयंकर भूकम्प के सन्दर्भ में जिन लोगों की मृत्यु हुई है, उनके प्रति मैं गहरी सम्वेदना व्यक्त करता हूं। वहां जन के अलावा धन की भी काफी क्षति हुई है, वहां के मृत लोगों के लिये सच्ची श्रद्धाजंलि यही हो सकती है कि हम अपने सीमित संसाधनों से, दलगत भावनाओं से ऊपर उठकर, पूरी शक्ति के साथ उनके पुनर्वास की व्यवस्था करें। मैं एक बार पुनः अपनी ओर से, अपने दल की ओर से, श्री राम आसरे वर्मा जी के विचारों से अपने को सम्बद्ध करते हुये आपसे प्रार्थना करता हूं कि हमारी शोक संवेदनायें इन सभी के परिवारों तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री कैलाश सिंह यादव–

मान्यवर, श्री रामनन्दन सिंह (वाराणसी), श्री पुरुषोत्तम दास (मिर्जापुर), श्री नारायण हरि शर्मा (अलीगढ़), श्री गोमती यादव (आजमगढ़), श्री सोनपाल (बदायूं), श्री राजाराम शास्त्री (कानपुर), श्री राम सनेही भारतीय (बाँदा), श्री ईश्वर शरण (गोण्डा), कु० श्रद्धा देवी (मेरठ), श्री राम शिरोमणि दुबे (जौनपुर), श्री शारदा प्रसाद रावत (गोरखपुर), श्री महेन्द्र रिपुदमन सिंह (आगरा), श्री गिरजा प्रसाद (बाराबंकी), श्री कृष्ण बहादुर मिश्र (बहराइच), श्री चन्द्र सिंह रावत (गढ़वाल), श्री किन्दर लाल (हरदोई), श्री भगवती चरण निर्मोही (गढ़वाल), श्री राजा जगदीश नारायण दत्त सिंह (खीरी), श्री असगर अली (देवरिया), श्री राम प्रकाश यादव (मथुरा), श्री ईश्वरी सिंह (बुलन्दशहर), श्री सुरथ बहादुर शाह (लखीमपुर खीरी), श्री रामायण राय (देवरिया), श्री कल्याण सिंह सोलंकी (बरेली) इन सारे नेताओं के निधन से हम सभी लोगों को बहुत दुख हुआ है। विशेषरूप से मैं इतना अवश्य कहना चाहूंगा कि जो राजनैतिक हत्यायें हो रही हैं उन पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये। श्री शारदा प्रसाद रावत जी की हत्या जिन परिस्थितियों में हुई है वह हम सब के लिए चिन्ता का विषय है। एक ऐसा साहसी व्यक्ति जो मण्डल आयोग की सिफारिशों को लागू करना चाहता था। जैसे परमाईलाल जी ने दलितों के लिए काम किया वैसे ही पिछड़ों के उत्थान व पूर्वांचल में एक संघर्षशील व जुझारू नेता के रूप में श्री शारदा प्रसाद रावत जी उभरे थे। मैं उनके प्रति अपनी ओर से और अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि प्रस्तुत करता हूं और साथ ही यह भी चाहता हूं कि जो इस तरह की राजनैतिक हत्यायें हो रही हैं उन पर विशेषरूप से ध्यान देकर सत्तापक्ष को उसकी जांच करनी चाहिये। आखिर इन हत्याओं के पीछे कौन से कारण हैं। माननीय श्री शारदा प्रसाद रावत व श्री महेन्द्र रिपुदमन सिंह जी के साथ १९७७ से १९८० के बीच मुझे मंत्री रहने का सौभाग्य मिला। मैं श्री राम आसरे वर्मा जी से सहमत हूं और हमें प्रयास करना चाहिये कि

जो इस प्रकार के विशिष्ट राजनैतिक व्यक्ति हों, चाहे वे किसी भी जिले या दल के हों, अगर वे यहां पर किसी विशिष्ट पदों पर विराजमान रहे हों तो उनके दरवाजे जाकर अवश्य श्रद्धांजलि अर्पित की जानी चाहिये। अगर इसमें कहीं चूक हुई हो तो इसमें सुधार होना चाहिये। इन दिवंगत नेताओं में से कई नेता साहित्यिक व सांस्कृतिक जगत से जुड़े रहे हैं, बहुत सी शिक्षण संस्थाओं से जुड़े रहे हैं और कुछ नेता ऐसे हैं जो स्वतंत्रता संग्राम सेनानी रहे हैं जिन्हें हम स्वतंत्रता संग्राम का अप्रतिम योद्धा भी मान सकते हैं। इन सभी नेताओं के न रहने से हमारे प्रदेश को बड़ी क्षति हुई है। इस सदन में रहकर समय-समय पर उन्होंने जो भावनायें व्यक्त की हैं, उनसे हमें प्रेरणा लेनी चाहिये। बड़े दुख के साथ मैं एक बात और कहना चाहता हूं कि शासन और प्रशासन को सचेत होना चाहिये कि पं० सूरज भान जो सन् १९८० से १९८४ तक इस सदन के सदस्य थे अभी २३ जनवरी को उनका निधन हो गया, इस सूचना को तत्काल सदन को देना चाहिये। इस सूचना को आज अवश्य आ जाना चाहिये था। जिन कारणों की वजह से यह सूचना आज यहां पर नहीं आई है इसे लापरवाही माना जाना चाहिये। इस सूचना को तुरन्त सदन में पेश किया जाय।

मान्यवर, भूकम्प में जिन लोगों की मृत्यु हुई है, उनके प्रति भी मैं और मेरा दल श्रद्धांजलि प्रकट करता है और साथ ही आतंकवादियों की गोलियों से लड़ाई में जो लोग शिकार हुए हैं और गाजीपुर, बाँदा व गोंडा जिले में छात्र जो गोली से मारे गये हैं, उनके प्रति भी मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और भगवान से प्रार्थना करता हूं कि इन सभी दिवंगत आत्माओं को भगवान शान्ति प्रदान करे। संवेदना की इन भावनाओं को मेरे दल की ओर से उक्त सभी दिवंगत आत्माओं के शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

* श्री बेनी प्रसाद वर्मा---

मान्यवर, चौबीस भूतपूर्व सदस्य, जिन्होंने इस सदन की और इस प्रदेश की सेवा की है, आज हम लोगों के बीच नहीं रहे। इन सभी दिवंगत आत्माओं के प्रति माननीय नेता सदन, माननीय श्री राम आसरे वर्मा जी, माननीय नेता कांग्रेस पार्टी व माननीय नेता जनता दल (अ) ने जो विचार यहां पर व्यक्त किए हैं, हमारा दल भी अपने को उनसे सम्बद्ध करता है। मान्यवर, इन चौबीस माननीय सदस्यों में से दो माननीय सदस्य ऐसे भी हैं, जिनका निधन वर्षों पूर्व हो गया था, लेकिन उन्हें अन्तिम सम्मान देने में हमें काफी विलम्ब हुआ है। श्री राम नन्दन सिंह व श्री पुरुषोत्तम दास जी का निधन क्रमशः १९८७ व १९९० में हो गया था, हम आपसे अपेक्षा करेंगे कि वे कौन से कारण रहे हैं, जिनकी वजह से हमें इन दो दिवंगत आत्माओं के प्रति अन्तिम सम्मान देने में विलम्ब हुआ है, इसका पता लगाया जाना चाहिये साथ ही इस बात को गम्भीरता से लिया जाना चाहिये। इसी तरह से तमाम ऐसे माननीय सदस्य हैं जैसे श्री गोमती यादव जी, कु० श्रद्धा देवी, श्री शारदा प्रसाद रावत, श्री महेन्द्र रिपुदमन सिंह, श्री कृष्ण बहादुर, श्री किन्दर लाल जी व श्री राम प्रकाश यादव जी, श्री ईश्वरी सिंह, श्री सुरथ बहादुर शाह जिन लोगों के साथ काम करने का मुझे मौका मिला है, यह सब लोग महान समाज सेवी थे और उन्होंने किसी न किसी रूप में इस देश और प्रदेश को अपना योगदान दिया है।

श्री शारदा प्रसाद रावत के बारे में अभी अन्य नेताओं ने उल्लेख किया है, उनकी निर्मम हत्या की गयी, यह हम सभी लोगों के लिये चिन्ता की बात है। मान्यवर, सरकारें बदलती रहती हैं, लेकिन राजनीतिक लोगों का जीवन जोखिम भरा रहता है। उनकी सुरक्षा को राजनीति से नहीं जोड़ना चाहिये। अतएव, श्री रावत जी के हत्यारों को दंड देने के सम्बन्ध में, आप से अपेक्षा करता हूं, प्रभावी ढंग से कार्यवाही होनी चाहिये।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनरीक्षण नहीं किया।

श्री गिरजा प्रसाद जी बाराबंकी के थे और वह महान स्वतंत्रता सेनानी थे। सन् १९३० से सन् १९४२ तक कई बार वह जेल गये। ऐसे लोग राजनीति में बहुत कम मिलते हैं जो पद की इच्छा नहीं रखते हैं। श्री गिरजा प्रसाद जी ने कभी भी पद की इच्छा नहीं की, वे सदैव समाज की सेवा में लगे रहे, तत्पर रहे। वह हमारे गुरू भी थे। राम सेवक यादव जी ने उनको सन् १९६२ में चुनाव लड़ाया, लेकिन उन्होंने कभी भी चुनाव लड़ने की इच्छा नहीं की और जो सोशलिस्ट पार्टी का दफ्तर १९४८ में कायम था, वह दफ्तर उनके घर पर सदैव चलता रहा और वहां पर बराबर बैठकें होती रहीं। श्रीमन्, ऐसे लोग बहुत कम मिलते हैं, जिनका उद्देश्य केवल समाज सेवा हो। इसी तरह से श्री कृष्ण बहादुर मिश्र जी का जीवन भी बड़ा संघर्षपूर्ण रहा है। वह १९६७ में इस सदन के सदस्य चुने गये और उप मंत्री भी रहे। वह भी आज हमारे बीच नहीं रहे। आपसे अनुरोध है कि इन सभी २४ सदस्यों के परिवार वालों के पास हमारी और हमारे दल की शोक संवेदनायें भेजने की कृपा करें।

मान्यवर, भूकम्प पीड़ित लोगों के लिये जो माननीय मुख्य मंत्री जी ने शोक प्रस्ताव रखा है, उससे भी मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूँ। अच्छा यह होता कि यह प्रस्ताव अलग से यहां पर लाया जाता। यह बहुत बड़ी विपदा हमारे प्रदेश में आयी है और जो जानकारी मिल रही है, उससे ऐसा प्रतीत होता है कि जो आर्थिक सहायता वहां पर मिलनी चाहिये उसमें कहीं न कहीं पर कोई कमी है। मेरा निवेदन है कि सीमित आर्थिक साधनों से वहां पर अधिक से अधिक सहायता पहुंचायी जानी चाहिये। इसमें कहीं न कहीं पर कोई कमी है। उसको दूर किया जाना चाहिए। उनकी ईमानदारी से सहायता की जानी चाहिये। अगर धन की कमी हो, तो कटौती करके उनको सहायता दी जानी चाहिये जिससे जो प्राकृतिक आपदा से उनको हानि हुई है, उससे उनको कुछ राहत मिल सके। भूकम्प पीड़ितों को जो वहां जन-धन की हानि हुई है, उससे राहत दिलाने की कोशिश होनी चाहिये और उनके परिवार जन को हमारी और हमारे दल की शोक संवेदनायें भेजने की कृपा करें।

श्री राम लखन–

माननीय अध्यक्ष महोदय, स्व० राम नन्दन सिंह, स्व० पुरुषोत्तम दास (मिर्जापुर), स्व० नारायण हरि शर्मा(अलीगढ़), स्व० गोमती यादव (आजमगढ़), स्व० सोनपाल (उर्फ सोहन लाल पिपले) (बदायूं), स्व० राजा राम शास्त्री (कानपुर), स्व० राम सनेही भारतीय (बांदा), स्व० ईश्वर शरण (गोंडा), स्व० कु० श्रद्धा देवी (मेरठ), स्व० राम शिरोमणि दुबे (जौनपुर), स्व० शारदा प्रसाद रावत (गोरखपुर), स्व० महेन्द्र रिपुदमन सिंह राजा (आगरा), स्व० गिरजा प्रसाद (बाराबंकी), स्व० कृष्ण बहादुर मिश्र (बहराइच), स्व० चन्द्र सिंह रावत (गढ़वाल), स्व० किंदरलाल (हरदोई), स्व० भगवती चरण निर्मोही (गढ़वाल), स्व० राजा जगदीश नारायण दत्त सिंह (खीरी), स्व० असगर अली (देवरिया), स्व० राम प्रकाश यादव (मथुरा), स्व० ईश्वरी सिंह (बुलंदशहर), स्व० सुरथ बहादुर शाह (लखीमपुर खीरी), स्व० रामायण राय (देवरिया), स्व० कल्याण सिंह सोलंकी (बरेली) आज हमारे बीच नहीं हैं। श्रीमन्, इन लोगों की मृत्यु से हमारे प्रदेश को काफी क्षति पहुंची है। इनके साथ ही साथ भूकम्प पीड़ित परिवारजनों की मृत्यु से उनके परिवार तथा प्रदेश को बहुत बड़ी क्षति हुई है। मेरे और मेरे दल को इस संवेदना संदेश में जोड़ दिया जाय। श्रीमन्, खासतौर से स्व० गोमती यादव जो आजमगढ़ जिले के विधायक रहे हैं वह मेरे जिले से मिला हुआ है मैं उनके विषय में कहना चाहता हूं कि गोमती यादव जी एक निर्भीक साहसी और जनप्रिय नेता थे। वह अपनी लोकप्रियता के कारण ही निर्दलीय के रूप में अच्छे वोटों से जीतकर इस सदन में आये। आज जो २४ स्व० भूतपूर्व सदस्यों के निधन के बारे में शोक संवेदना माननीय नेता सदन, अन्य माननीय नेताओं माननीय नेता राष्ट्रीय कांग्रेस, माननीय नेता जनता दल माननीय नेता जनता पार्टी बेनी प्रसाद वर्मा जी ने जो शोक संवेदना व्यक्त की है उससे मैं अपने और अपने दल बहुजन समाजवादी पार्टी को संबद्ध करता हूं। मेरा आपसे निवेदन है कि इन मृत आत्माओं के परिवारों को हमारी तरफ से तथा हमारे दल की तरफ से संवेदना भेजने की कृपा करें।

श्री ऊदल–

माननीय अध्यक्ष जी, माननीय स्व० रामनन्दन सिंह, स्व० पुरुषोत्तम दास, स्व० नारायण हरि शर्मा, स्व० गोमती यादव, स्व० सोनपाल (उर्फ सोहन लाल पिपले), स्व० राजाराम शास्त्री, स्व० राम सनेही भारतीय, स्व० ईश्वर शरण, स्व० कु० श्रद्धा देवी, स्व० राम शिरोमणि दुबे, स्व० शारदा प्रसाद रावत, स्व० महेन्द्र रिपुदमन सिंह राजा, स्व० गिरजा प्रसाद, स्व० कृष्ण बहादुर मिश्र, स्व० चन्द्र सिंह रावत, स्व० किन्दर लाल, स्व० भगवती चरण निर्मोही स्व० राजा जगदीश नारायण दत्त सिंह, स्व० असगर अली, स्व० राम प्रकाश यादव, स्व० ईश्वरी सिंह, स्व० सुरथ बहादुर शाह, स्व० रामायण राय, स्व० कल्याण सिंह सोलंकी ये २४ भूतपूर्व माननीय सदस्यों का निधन हो गया है। इन २४ व्यक्तियों से, जो आज हमारे बीच में नहीं हैं, मेरा व्यक्तिगत संबंध भी रहा है। इन माननीय सदस्यों के साथ माननीय सदन में मुझे काम करने का मौका मिलता रहा है।

इसमें बहुत से ऐसे माननीय सदस्य हैं जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई में अपनी जान की बाजी लगा दी थी। जैसे श्री राम शिरोमणि दुबे जी को फांसी की सजा हुई थी और जिनको छुड़ाने के लिये भूतपूर्व प्रधान मंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू और चन्द्र भानु गुप्त जी ने हाई कोर्ट में पैरवी किया था।

श्रीमन्, ऐसे ही श्री रामायण राय जी जो समाजवादी आंदोलन के विद्वान और कर्मठ नेता थे तथा इनके अलावा और भी बहुत से भूतपूर्व श्री सुरथ बहादुर शाह प्रखर वक्ता थे जिनको लोग यहां शांत सुनते थे। इसी तरह से ईश्वरी सिंह जी बुलन्दशहर के थे जो बहुत ही कर्मठ और त्यागी एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। इसी तरह से अलीगढ़ के श्री नारायण हरि शर्मा जो विद्वान, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और महान सेवक थे, आज हमारे बीच से उठ गये। इन लोगों के निधन से हमारे प्रदेश का बहुत बड़ा नुकसान हुआ है जिसकी पूर्ति होना अब संभव नहीं है। इस क्षति को हमारा प्रदेश अब पूरा नहीं कर पायेगा।

श्रीमन् इन भूतपूर्व माननीय सदस्यों के बारे में मा० नेता सदन और अन्य मा० नेताओं ने जो शोकोद्गार व्यक्त किया है उसके साथ मैं अपने और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं और आपसे निवेदन करता हूं कि इन सभी के शोकसंतप्त परिवार के जो लोग हैं उनके यहां हमारी शोक संवेदनायें आप पहुंचाने की कृपा करें।

श्रीमन्, गढ़वाल में भूकम्प पीड़ितों के बारे में कहना चाहता हूं कि जो वहां दैवी आपदा से जानमाल का बहुत बड़ा नुकसान हुआ है और बहुत से लोग काल के गाल में चले गये उनके प्रति भी जो संवेदनायें मा० नेता सदन और अन्य नेताओं ने व्यक्त किया है उनसे भी मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं और आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि वहां जिनकी मृत्यु हुई है उनके परिवारजनों को भी शोक सम्वेदनायें हमारे दल की ओर से भेजने की आप कृपा करें।

* श्री दीना नाथ सिंह यादव–

मान्यवर, इस सदन के २४ भूतपूर्व मा० सदस्यों के निधन पर मा० नेता सदन तथा अन्य नेताओं ने जो अपने शोकोद्गार व्यक्त किये हैं मैं उनसे अपने और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं।

मान्यवर, मुझे इस शोक प्रस्ताव में आज माननीय श्री राम नन्दन सिंह का नाम देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि उनका आज से ४ साल पहले निधन हो गया था, और वह ऐसे व्यक्ति थे जिनको मैं बहुत अच्छी तरह से जानता हूं, मैं उनके पड़ोस का रहने वाला हूं, मैं बचपन में उनके बहुत नजदीक रहा हूं, वह चकिया के गांधी कहे जाते थे, ईमानदारी के मामले में कोई दूसरा नाम उनके समान नहीं आता था और संयोग से इस सदन में उनके भतीजे यहां सदन में मौजूद हैं जो सोनभद्र से चुनाव जीतकर माननीय सदस्य बने हैं, परन्तु आज उस लम्बे काल के बाद उनकी याद की गयी। मैं चाहता हूँ कि इसके बारे में पता किया जाना चाहिए और इस सदन को जानकारी दी जानी चाहिए। मैं अपनी तरफ से, अपने दल की तरफ से इन माननीय सदस्यगण को जो हमारे बीच नहीं हैं, अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए आपसे निवेदन करता हूँ कि हमारी भावनाओं को उनके परिवारों तक पहुँचाने का कष्ट करें।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

इसके साथ ही गढ़वाल में आये भूकम्प से जो लोग मारे गये हैं उनके प्रति और अपनी पार्टी की तरफ से श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए आपसे निवेदन करता हू कि हमारी भावनाओं को उनके परिवारों तक पहुँचाने का कष्ट करें इसके साथ ही गढ़वाल में आये भूकम्प से जो लोग मारे गये है उनके प्रति भी मैं अपनी और अपनी पार्टी की तरफ से श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए आपसे निवेदन करता हूँ कि हमारी संवेदनाएं उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

श्री राम स्वरूप वर्मा–

मान्यवर, यशकायी श्री रामनन्दन सिंह (वाराणसी), यशकायी श्री पुरुषोत्तम दास (मिर्जापुर), यशकायी श्री नारायण हरि शर्मा (अलीगढ़), यशकायी श्री गोमती यादव (आजमगढ़), यशकायी श्री सोनपाल (बदायूं), यशकायी श्री राजाराम शास्त्री (कानपुर), यशकायी श्री राम सनेही भारतीय (बांदा), यशकायी श्री ईश्वर शरण (गोण्डा), यशकायी कु० श्रद्धा देवी (मेरठ), यशकायी श्री राम शिरोमणि दुबे (जौनपुर), यशकायी श्री शारदा प्रसाद रावत (गोरखपुर), यशकायी श्री महेन्द्र रिपुदमन सिंह राजा (आगरा), यशकायी श्री गिरजा प्रसाद (बाराबंकी), यशकायी श्री कृष्ण बहादुर मिश्र (बहराइच), यशकायी श्री चन्द्र सिंह रावत (गढ़वाल), यशकायी श्री किन्दर लाल (हरदोई), यशकायी श्री भगवती शरण निर्मोही (गढ़वाल), यशकायी राजा जगदीश नारायण दत्त सिंह (खीरी), यशकायी श्री असगर अली (देवरिया), यशकायी श्री राम प्रकाश यादव (मथुरा), यशकायी ईश्वरी सिंह (बुलन्दशहर), यशकायी श्री सुरथ बहादुर शाह (लखीमपुर खीरी), यशकायी श्री रामायण राय (देवरिया), यशकायी श्री कल्याण सिंह सोलंकी (बरेली) आज हमारे बीच नहीं हैं। इनके बारे में जो शोकोद्गार नेता सदन, श्री राम आसरे वर्मा जी और दूसरे विपक्षी नेताओं ने व्यक्त किए हैं, मैं उनसे अपने और अपने दल को सम्बद्ध करता हूँ और सभी यशकायी समाजसेवियों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। मान्यवर, यह सभी समाजसेवी हमारे बीच से उठ गये हैं इससे समाज को बड़ा नुकसान हुआ है जिसकी पूर्ति होना असम्भव है। मैं अपनी और अपने दल की तरफ से इनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और आपसे आग्रह करता हूँ कि हमारी संवेदनाएं उनके परिवार तक पहुँचा दें। मान्यवर, प्राकृतिक आपदाएं हुआ करती हैं और उससे जो जान लेवा परिणाम निकलते हैं वह बड़े दुःखदायी होते हैं। अच्छा तो होता कि गढ़वाल में आये भूकम्प से जो जान-माल की क्षति हुई है उसके लिये अलग से शोक प्रस्ताव आता। पर मैं नेता सदन और विपक्षी नेताओं ने इस सम्बन्ध में जो शोकाद्गार व्यक्त किये हैं मैं उससे अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूँ। मान्यवर, उनके परिवारों तक हमारी संवेदनाएं पहुंचायी जाएं और उनको सहायता दी जाए।

* निर्वेन्द्र कुमार–

मान्यवर, नेता सदन, श्री राम आसरे वर्मा , माननीय श्री कैलाशनाथ सिंह यादव, माननीय नेता बेनी प्रसाद वर्मा जी तथा तमाम दलों के नेताओं ने जो विचार व्यक्त किए उससे मैं अपने को सम्बद्ध करते हुए वर्तमान सदस्य परमाई लाल (हरदोई), भूतपूर्व सदस्य श्री रामानन्दन सिंह (वाराणसी), श्री पुरुषोत्तम दास (मिर्जापुर), श्री नारायण हरि शर्मा (अलीगढ़), श्री गोमती यादव (आजमगढ़), श्री सोनपाल (बदायूं), श्री राजाराम शास्त्री (कानपुर), श्री राम सनेही भारतीय (बांदा), श्री ईश्वर शरण (गोण्डा), कु० श्रद्धा देवी (मेरठ), श्री राम शिरोमणि दुबे (जौनपुर), श्री शारदा प्रसाद रावत (गोरखपुर), श्री महेन्द्र रिपुदमन सिंह राजा (आगरा), श्री गिरजा प्रसाद (बाराबंकी), श्री कृष्ण बहादुर मिश्र (बहराइच), श्री चन्द्र सिंह रावत (गढ़वाल), श्री किन्दर लाल (हरदोई), श्री भगवती शरण "निर्मोही" (गढ़वाल), श्री राजा जगदीश नारायण दत्त सिंह (खीरी), श्री असगर अली (देवरिया), श्री राम प्रकाश यादव (मथुरा), श्री ईश्वरी सिंह (बुलन्दशहर), श्री सुरथ बहादुर शाह (लखीमपुर खीरी), श्री रामायण

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

राय (देवरिया), श्री कल्याण सिंह सोलंकी (बरेली) के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूँ। इन लोगों के निधन से निश्चित रूप से जो समाजसेवियों की कमी उत्पन्न हुई है इसकी अपूर्ति हो पाना मुझे असंभव सा लगता है। मैं खासकर ध्यान दिलाना चाहता हूँ लखीमपुर खीरी के सुरथ बहादुर शाह के बारे में, वह बहुत ईमानदार तथा स्पष्ट वक्ता थे। उन्होंने जमींदार परिवार में जन्म लेते हुए जो निर्बल वर्ग, मध्यम वर्ग की जो सेवा की वह बहुत बड़ी ईमानदारी से की। इस क्षर्ति की पूर्ति हमारे लखीमपुर खीरी में करने वाला कोई नहीं रह गया है।

मान्यवर, मैं उन लोगों को भी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ जो लोग आतंकवादियों की गोली से निहत्थे मारे गये, जिन लोगों की आतंकवादियों ने जान ले ली। उनके परिवारों को मैं अपना शोक-संदेश आपके माध्यम से भिजवाना चाहता हूँ।

इसके अतिरिक्त मान्यवर, भूकम्प में जिनकी जानें चली गयीं उनको भी मैं अपनी ओर से अपने सदस्यों की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ हमारी शोक संवेदनायें उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री अध्यक्ष–

इस सदन के २४ भूतपूर्व सदस्यों के निधन के संदेश प्राप्त हुए। स्वर्गीय रामनन्दन सिंह, स्वर्गीय पुरुषोत्तम दास, स्वर्गीय नारायण हरि शर्मा, स्वर्गीय गोमती यादव, स्वर्गीय सोनपाल, स्वर्गीय राजाराम शास्त्री, स्वर्गीय रामसनेही, स्वर्गीय ईश्वर शरण, स्वर्गीय श्रद्धा देवी, स्वर्गीय राम शिरोमणि, स्वर्गीय शारदा प्रसाद रावत, स्वर्गीय महेन्द्र रिपुदमन सिंह, स्वर्गीय गिरजा प्रसाद, स्वर्गीय कृष्ण बहादुर मिश्र, स्वर्गीय चन्द्र सिंह रावत, स्वर्गीय किन्दर लाल, स्वर्गीय भगवती शरण, स्वर्गीय राजा जगदीश नारायण, स्वर्गीय असगर अली, स्वर्गीय राम प्रकाश यादव, स्वर्गीय ईश्वरी सिंह, स्वर्गीय रामायण राय, स्वर्गीय कल्याण सिंह यह भूतपूर्व सदस्य हमारे बीच नहीं हैं। इनमें से अनेक सदस्य परिपक्व आयु में हैं हमारा साथ छोड़ गये, परन्तु इनमें कई ऐसे हैं जिनका असमय निधन हो गया। श्री गोमती यादव यम के क्रूरतम हाथों मात्र ३३ वर्ष की आयु में हमारे बीच से चले गये। श्री गोमती यादव, श्री सोनपाल, श्री शारदा प्रताप रावत श्री असगर अली यह ऐसे भूतपूर्व सदस्य थे जिनसे अभी इस प्रदेश को बहुत आशायें थीं और यह लोगों को विश्वास था कि यथा समय वह पुनः इस सदन की सदस्यता प्राप्त करके अपने अनुभव, अपनी सक्रियता का लाभ दे सकेंगे। आज वह हमारे बीच में नहीं हैं। श्री राम नंदन सिंह, श्री पुरुषोत्तमदास, श्री नारायण हरि शर्मा, श्री राजाराम शास्त्री, श्री राम सनेही भारतीय, श्री ईश्वर शरण, कुमारी श्रद्धा देवी, श्री रामशिरोमणि दुबे, राजा महेन्द्र रिपुदमन सिंह, श्री गिरजा प्रसाद जी, श्री चन्द्र सिंह, श्री सुरथ बहादुर शाह, श्री रामायण राय जी उन अनुभवी राजनीतिज्ञों में से हैं जिनके मार्ग-दर्शन ने सदैव इस सदन में और इस सदन के बाहर प्रदेश की जनता को एक नयी दिशा देने का प्रयास किया है। इनमें से कुछ सम्मानित सदस्य इस विधान सभा के अनेकों बार सदस्य रहे परन्तु कुछ ऐसे भी थे जो मात्र एक बार की सदस्यता में अमिट छाप छोड़ गये हैं। हम सब उनके निधन से दुखी हैं। विशेष रूप से मैं उल्लेख करना चाहूँगा पद्मभूषण माननीय राजाराम शास्त्री जी का, वह प्रख्यात समाजसेवी, बहुत विद्वान काशी विद्यापीठ सदैव उनका स्मरण करेगा। हम स्मरण करना चाहेंगे श्री शारदा प्रसाद रावत ऐसे युवा, अनुभवी और उत्साही राज्य मंत्री का, जिन्होंने मेरे साथ १९७७ में कार्य किया था। मैं विशेष रूप से उल्लेख करना चाहूँगा श्री महेन्द्र रिपुदमन सिंह का जिन्होंने १९५९ में उस समय की धारा को तोड़कर चक्रवर्ती राजगोपालाचारी के साथ एक स्वतंत्र पार्टी की स्थापना की थी और अपना योगदान दिया था। राज्य मंत्री के रूप में उनकी सेवायें सदन के अभिलेखों में अंकित हैं। उनकी विदेश शिक्षा का लाभ भी भारतीय परिवेश में समय-समय पर प्राप्त हुआ है। श्री भगवती चरण निर्मोही लेखक और संपादक रहे। उनकी लोकप्रियता का प्रमाण लगातार अनेक सार्वजनिक पदों पर निर्वाचित होने से सिद्ध

होता है। श्री ईश्वरी सिंह स्वतंत्रता संग्राम के प्रखर सेनानी थे। श्री रामायण राय जी सरल भाषणी और मृदु व्यवहार के लिये हम सबके बीच प्रसिद्ध रहेंगे। इन सब भूतपूर्व सदस्यों के निधन से इस सदन और इस प्रदेश की जनता को हानि हुई है । हम सब उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये उनके परिवार जनों के लिये ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर उन्हें पर्याप्त शक्ति दे जिससे कि वह अपनी इस हानि को सहन कर सकें। मैं, माननीय नेता सदन और अन्य माननीय नेतागणों ने जो शोकाद्गार व्यक्त किये हैं उनको स्वर्गीय सदस्यों के परिवारजनों तक पहुँचा दूंगा। मेरा निवेदन है कि सभी भूतपूर्व सदस्यों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये हम सब खड़े होकर एक मिनट मौन धारण करें।

(सभी सदस्य एक मिनट के लिये मौन खड़े हुये)

गढ़वाल क्षेत्र में भूकम्प से जो हानि हुई है, उनके परिवारों के प्रति इस सदन की शोक संवेदनाएं मैं पहुंचा दूंगा। मैं उनके प्रति अपनी भी शोक संवेदनाएं प्रकट कर रहा हूँ।

उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व राज्यपाल श्री गणपति राव देवजी तपासे के निधन पर शोकोद्गार

*मुख्य मंत्री (श्री कल्याण सिंह)–

माननीय अध्यक्ष, मुझे बड़े दुःख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व राज्यपाल, श्री गणपति राव देवजी तपासे इस संसार में नहीं रहे। उनका निधन दिनांक ३-१०-१९९१ को दक्षिण बम्बई के सेंट जार्ज अस्पताल में हो गया। वे लगभग ८३ वर्ष के थे। श्री तापसे का जन्म ३० अक्टूबर, १९०८ को हुआ था। उन्होंने बी०ए०, एल-एल०बी० तक की शिक्षा ग्रहण की थी। श्री तापसे ने स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय भूमिका का निर्वाहन किया था। देश की आजादी की लड़ाई में वह उस पंक्ति के सेनानी थे, जिसने देश का नेतृत्व किया था। इसके फलस्वरूप उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा। वे पहली बार १९४६ में महाराष्ट्र विधान सभा के सदस्य चुने गये थे। उसके पश्चात् पुनः १९५२ में वहां की विधान सभा के सदस्य बने। श्री तपासे महाराष्ट्र सरकार में मंत्री तथा वर्ष १९६२ से १९६८ तक राज्य सभा के सदस्य रहे। वे वर्ष १९६८ से १९७९ तक महाराष्ट्र रेलवे कमीशन के अध्यक्ष पद पर कार्यरत रहे। अक्टूबर, १९७७ से फरवरी, १९८० तक वे उत्तर प्रदेश के राज्यपाल तथा फरवरी, १९८० से १९८५ तक हरियाणा राज्य के राज्यपाल रहे। श्री तपासे एक महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे जिसने सदैव उजड़ों, पिछड़ों, दलितों के लिये लड़ाई लड़ी। वे बहुत ही योग्य कुशल प्रशासक थे। वे उस पीढ़ी के व्यक्ति थे जो सदा सार्वजनिक जीवन में नैतिक मूल्यों पर बल देती है। उस पीढ़ी के लोग लगातार उठ रहे हैं तो ऐसी रिक्तता पैदा हो रही है जिसका भरण्यी आज के दिनों में कठिन है। श्री तपासे के निधन से देश ने एक महान स्वतंत्रता सेनानी खो दिया है, राष्ट्रीय नेता खो दिया है। प्रभु से कामना है कि हमें ऐसी शक्ति प्रदान करें कि उस पीढ़ी के राजनेताओं द्वारा जिस प्रकार के आदर्श स्थापित किये गये थे, जिन जीवन मूल्यों के आधार पर उन्होंने सार्वजनिक जीवन में अच्छे उदाहरण प्रस्तुत किये, हम उस उदाहरण पर चल सकें। मैं अपनी ओर से, अपने दल की ओर से दिवंगत आत्मा के प्रति बहुत ही सम्मान के साथ अपनी संवेदनाएं और श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और प्रार्थना करता हूं कि ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे और उनके शोक संतप्त परिवार को धैर्य बंधावे। आपसे प्रार्थना है कि मेरी और मेरे दल की ये संवेदनाएं उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

*श्री राम आसरे वर्मा–

मान्यवर, हमारे प्रदेश के भूतपूर्व राज्यपाल माननीय गणपति राव देवजी तपासे ८३ वर्ष की अवस्था में हमारे बीच से चल पड़े। ये स्वतंत्रता संग्राम सेनानी रहे। स्वतंत्रता आन्दोलन में अनेकों बार जेल की

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

यात्राएं कीं और गांधीवादी राजनेता के रूप में उनकी सेवाएं देश को मिलती रहीं। मान्यवर, उनके दिल में दलितों के प्रति जो लगाव था, वह लगाव उनके प्रयासों से, उनके आचरण में ज़ाहिर होता रहा है। मान्यवर, ऐसी विभूति के उठ जाने से मैं और मेरे दल के लोग दुःखी हैं और जो शोकाद्गार माननीय नेता सदन ने व्यक्त किये हैं, मैं अपेक्षा करता हूँ कि मुझको और मेरे दल को भी उनसे सम्बद्ध करते हुए ये श्रद्धा के पुष्प उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

* श्री प्रमोद तिवारी–

मान्यवर, भूतपूर्व राज्यपाल श्री गणपतिराव देवजी तपासे का निधन ३ अक्टूबर, १९९१ को दक्षिण मुम्बई के सेंट जार्ज अस्पताल में हो गया। वे लगभग ८३ वर्ष के थे। उनका जन्म ३० अक्टूबर, १९०८ को हुआ था। उन्होंने स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय रूम से भाग लिया। उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा। वे वर्ष १९४६ में महाराष्ट्र के विधान सभा के सदस्य चुने गये और उसके बाद पुनः १९५२ में विधान सभा के सदस्य बने। श्री तपासे महाराष्ट्र सरकार में मंत्री तथा वर्ष १९६२ से १९६८ तक राज्य सभा के सदस्य रहे। इसके अतिरिक्त १९६८ से १९७९ तक अध्यक्ष, रेलवे कमीशन, महाराष्ट्र रहे। अक्टूबर, १९७७ से फरवरी, १९८० तक उत्तर प्रदेश के राज्यपाल तथा फरवरी, १९८० से १९८५ तक हरियाणा के राज्यपाल रहे। श्री तपासे एक महान स्वतन्त्रता सेनानी तथा गांधीवादी राजनेता थे, जो निरंतर दलितों के प्रति समर्पित रहे। वे एक योग्य एवं कुशल प्रशासक भी थे। आज भी राज्यपाल के रूप में उनकी सेवायें उत्तर प्रदेश और हरियाणा में भी लोग याद करते हैं। उत्तर प्रदेश के लोग जिन्होंने उनको काम करते देखा था, उन्होंने महामहिम राज्यपाल की सादगी को भी देखा था। उन्होंने संविधान के दायित्वों का निष्ठा और कर्तव्यपरायणता से निर्वहन किया। श्री तपासे की मृत्यु से केवल महाराष्ट्र ही नहीं, बल्कि इस देश ने दलितों की लड़ाई लड़ने वाला एक महान योद्धा खो दिया है। मैं अपनी ओर से, अपने दल की ओर से आपसे आग्रह करूंगा कि हमारी शोक संवेदनायें उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री कैलाश नाथ सिंह यादव–

श्री गणपतराव देवजी तपासे का निधन दिनांक ३-१०-१९९१ को दक्षिण मुम्बई के सेंट जार्ज अस्पताल में हो गया। वे लगभग ८३ वर्ष के थे। उनका जन्म ३० अक्टूबर, १९०८ में हुआ था। श्री तपासे ने स्वतन्त्रता संग्राम आंदोलन में बहुत ही सक्रिय भूमिका निभाई और वे गांधीवादी राजनेता थे। गांधीवादी विचारधारा के और स्वतन्त्रता संग्राम के समय जिन लोगों ने लड़ाई लड़ी थी, उनमें अब कुछ गिने चुने लोग बचे हैं, उनमें श्री तपासे जी एक कड़ी थे, उनके निधन से वह कड़ी भी टूट गयी। सक्रिय रूप से स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेकर उन्होंने कई बार जेल यात्रायें कीं। महाराष्ट्र विधान सभा के वे सदस्य रहे। फिर महाराष्ट्र सरकार में मंत्री बने और राज्य सभा के भी सदस्य रहे। १९७७ से ८० के बीच श्री तपासे इस प्रदेश के राज्यपाल थे। उस समय विधायक और मंत्री के रूप में मुझे बहुत निकट से देखने का अवसर मिला, वे एक गम्भीर मितभाषी और निरंतर दलितों के उत्थान के प्रति समर्पित रहे। वे एक योग्य और कुशल प्रशासक भी थे। उनके निधन से देश का एक महान देशभक्त और स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी उठ गया। मैं परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनकी दिवंगत आत्मा को शांति दे और शोकाकुल परिवार को इस दुःख के सम्बरण करने की क्षमता प्रदान करें। मान्यवर, मैं अपनी ओर से और

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

अपने दल की ओर से श्री तपासे के निधन पर शोक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। कृपया मेरी भावनाओं को स्वर्गीय श्री तपासे के परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

* श्री बेनी प्रसाद वर्मा–

मान्यवर, हम सभी लोगों के बीच से श्री गणपतिराव देवजी तपासे गांधीवाद विचारधारा के पुरानी पीढ़ी के नेता आज हम लोगों के बीच में नहीं रहे। श्रीमन्, हम आप सब उनसे व्यक्गित रूप से परिचित थे, जब वे यहां पर राज्यपाल थे उत्तर प्रदेश के, इत्तफाक ही है। श्रीमन्, जितने ही लोग यहां पर अग्रिम पंक्ति में हैं, माननीय नेता सदन और अन्य नेता, सब लोग, उस समय सरकार में थे। उन्होंने सौम्य और अपने शिष्ट आचरण से हम लोगों को प्रभावित किया। वे दलितों के एक तरह से अगुआ थे। राजनैतिक जीवन में उन्हें महाराष्ट्र विधान सभा के सदस्य के रूप में मंत्री के रूप में सेवा करने का अवसर मिला। राज्य सभा के दो बार सदस्य और उत्तर प्रदेश तथा हरियाणा के राज्यपाल के रूप में भी उन्होंने प्रदेश और समाज की सेवा की है। श्रीमन्, आज वे हमारे बीच नहीं हैं। उनके निधन से देश ने एक महान स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी और गांधीवादी विचारधारा व्यक्तित्व का अभाव हुआ है। श्रीमन्, मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि श्री तपासे जी के प्रति अर्पित करता हूं, उनके परिवार तक हमारे शोकोद्गार भेजने का कष्ट करें।

*श्री राम लखन वर्मा–

मान्यवर, स्वर्गीय श्री गणपति राव देवजी तपासे, भूतपूर्व राज्यपाल, उत्तर प्रदेश के निधन से प्रदेश को ही नहीं बल्कि पूरे देश को क्षति पहुंची है। स्वर्गीय श्री तपासे जी एक सच्चे देश भक्त और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। श्रीमन्, श्री तपासे जी ने जो देश की आजादी में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है उससे लगता है कि वह मेरे देश के एक सच्चे सिपाही थे। श्रीमन्, उनकी शोक संवेदना में जो नेता सदन और नेता विरोधी दल तथा अन्य दल के नेताओं ने शोक संवेदना व्यक्त की हैं, मैं अपने को और अपने दल को उससे सम्बद्ध करता हूं। श्रीमन्, मेरा आपसे साथ ही साथ एक अनुरोध है कि मेरी तरफ से और मेरे दल की तरफ से उनके परिवारजनों तक हमारी शोक संवेदना भेजने का कष्ट करें।

*श्री ऊदल–

माननीय भूतपूर्व राज्यपाल श्री गणपति राव देवजी तपासे के बारे में जो विचार नेता सदन तथा अन्य नेताओं ने व्यक्त किये हैं, मैं अपने को उसके साथ सम्बद्ध करता हूं। माननीय तपासे जी गांधीवादी नेता थे और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। उच्च पदों पर रहकर महाराष्ट्र में मंत्री बने थे, राज्यसभा के सदस्य थे, हमारे उत्तर प्रदेश के राज्यपाल और हरियाणा के राज्यपाल थे। उच्च पद पर रहकर उन्होने देश की सेवा की है। वह हम सबके लिये अनुकरणीय थे। मान्यवर, उनके निधन से एक महान गांधीवादी और विचारक हमारे बीच से उठ गया है जिसकी पूर्ति असम्भव है। मैं, मान्यवर, अपनी ओर से और अपने दल की ओर से शोक व्यक्त करता हूं और आपसे निवेदन करता हूं कि शोक संवेदना स्वर्गीय तपासे जी के परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

* श्री दीनानाथ सिंह यादव–

मान्यवर, श्री तपासे हमारे सूबे के सबसे उच्च गौरवशाली सम्मानित पद पर रह चुके थे और इस पद पर पहुंचने के पूर्व उन्होंने आजादी की जंग में हिस्सा लेकर महाराष्ट्र की जनता की विभिन्न लड़ाइयों में जो देश की सेवा उन्होंने की थी उसे हमेशा याद रखा जायेगा। उनके निधन से निश्चित रूप से हमारे देश की क्षति हुई है। मैं अपनी तरफ से अपने दल की तरफ से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आपसे निवेदन करता हूं कि हमारी भावनाओं को, हमारी पार्टी की भावनाओं को उनके परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

श्री राम स्वरूप वर्मा–

मान्यवर, गणपति राव देवजी तपासे जी के निधन से हम सब दुखी हैं। उनके सम्बन्ध में जो शोकोद्‌गार नेता सदन और माननीय विपक्षी दलों के अन्य नेताओं ने वक्तव्य किये हैं, उनसे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं और उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। आपसे प्रार्थना है कि उनके शोक संतप्त परिवार तक हमारी शोक संवेदनायें भेजने की कृपा करें।

* श्री झाऊलाल यादव–

श्रीमन्, श्रद्धा के पात्र भूतपूर्व राज्यपाल श्री गणपति राव देवजी तपासे का निधन राष्ट्र की एक बहुत बड़ी क्षति है। ऐसे महान व्यक्ति के निधन से किसी परिवार विशेष का घाटा ही नहीं होता है बल्कि सारे समाज, सारे प्रदेश और देश का घाटा होता है और उसका स्थान पूरा कर पाना बड़ा मुश्किल होता है। तपासे जी का निधन हम सब लोगों के लिये चिन्ता का विषय है, क्योंकि भारत के इतिहास में आजादी की लड़ाई में तथा हमारे प्रदेश को उनके राज्यपाल रहते लाभ हुआ। हम अन्य दलों के माननीय नेताओं की भावनाओं से अपने को सम्बद्ध करते हुए आपसे यह निवेदन करते हैं कि उनके शोक संतप्त परिवार तक हमारी शोक संवेदनायें भेजने का कष्ट करें।

श्री अध्यक्ष–

३० अक्टूबर, १९०८ को जन्मे श्री गणपति राव देवजी तपासे जी का ३ अक्टूबर, १९९१ को ८३ वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। श्री तपासे १९७७ से १९८० तक उत्तर प्रदेश में राज्यपाल रहे, गांधीवादी दर्शन के श्री तपासे सशक्त कड़ी थे। उनके निधन से वह कड़ी टूट गयी, हम काफी हद तक उनके विचारों से वंचित रह गये। श्री तपासे जी सरल और सहृदय व्यक्ति थे। १९७७ में मैं और इस सदन के अनेक वर्तमान सदस्य उनसे परिचित हुए थे जब वे राज्यपाल के रूप में यहां कार्य कर रहे थे। हम सब उनकी कार्य कुशलता से बहुत प्रभावित थे। मुझे स्मरण है यदि किसी मंत्री के बारे में उनसे कुछ कहा जाता था तो वे स्वयं उस मंत्री को बुलाकर व्यक्तिगत जानकारी प्राप्त करते थे। उनके मन के अन्दर करुणा एक दम स्पष्ट झलकती थी। उनके विचार थे कि राजनीतिक पाक साफ रहे, लोग कुछ आदर्शों का अनुपालन करें और उन आदर्शों को कार्यरूप में परिणित कर लोगों के सामने एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करें। श्री तपासे के निधन से इस प्रदेश की जनता उनके मार्ग-दर्शन से वंचित रह गयी। यही नहीं विभिन्न शासकीय विभाग जहां उन्होंने अपनी कार्यक्षमता का परिचय दिया वे उनकी सेवाओं से वंचित हुए हैं। मैं श्री तपासे के शोक संतप्त परिवार के लिये ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनको इस हानि को सहन करने की शक्ति दे। माननीय नेता सदन, सभी राजनीतिक दलों के नेताओं और निर्दलीय

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

सदस्यों के शोकोद्गार उनके परिवार तक पहुंचा दूंगा । इसी के साथ-साथ मैं श्री स्वर्गीय श्री तपासे तथा भूकम्प में जिन लोगों की जन-हानि हुई है उनको श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आपसे निवेदन करता हूं कि एक मिनट मौन रहकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने का कष्ट करें।

(सभी सदस्य एक मिनट के लिये मौन खड़े हुए)

निधन की सूचनाओं को शीघ्र दिये जाने हेतु श्री अध्यक्ष द्वारा शासन को निर्देश

श्री अध्यक्ष–

कुछ माननीय भूतपूर्व सदस्यों के निधन के सम्बन्ध में सूचनायें देर से आयी हैं। मैं माननीय मुख्य मंत्री जी का ध्यान इस ओर आकृष्ट करना चाहूंगा कि वे सम्बन्धित जिला अधिकारियों को निर्देश देने का कष्ट करें कि यदि किसी भूतपूर्व अथवा वर्तमान सदस्य की निधन की सूचना मिलती है तो वे अविलम्ब इस सदन को तथा इस शासन को देंगे।

मुख्य मंत्री(श्री कल्याण सिंह)–

मान्यवर, आपकी अपेक्षानुसार इस प्रकार के आदेश दे दिये गये हैं।

कार्य-मंत्रणा समिति की बैठक की सूचना

श्री अध्यक्ष–

कार्य-मंत्रणा समिति की बैठक इसके तुरन्त बाद होने वाली है, जिसमें यह निर्णय लिया जायगा कि कल सदन की बैठक होगी या नहीं होगी इसकी सूचना समाचार-पत्र, आकाशवाणी व दूरदर्शन के माध्यम से दे दी जायगी।

अब हम उठते हैं।

(इसके बाद सदन १२ बजकर ४० मिनट पर अगले उपवेशन तक के लिये स्थगित हो गया ।)

प्रेम चन्द्र सक्सेना,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश ।

लखनऊ :
११ फरवरी, १९९२

पी०एस०यू०पी०–एल०320 विधान सभा (573)–1992–813 ।